The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 5 | May 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

आधुनिक समाज में बुनियादी शिक्षा की उपादेयता और समाधान

डॉ0 अतुल कुमार सिंह

आज के समय में भारतीय समाज के लोगो में शारीरिक श्रम के प्रति हीनता उत्पन्न होने लगी है। यह मानव जीवन में शिक्षा प्रणाणी का अत्यंत बड़ा दोष है। भारत में मानव श्रम बहुत बड़ी मात्रा मे उपलब्ध है श्रम अवहेलना करना देश की आर्थिक उन्नति में रुकावट उत्पन्न करती है। महात्मा गाँधी ने इसी कमी को पहचाना एवं बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र मे श्रम की प्रतिष्ठा कर शिक्षण को उत्पादकता से जोड़ने की कोशिश की। गाँधी जी के अनुसार किसी व्यक्ति को दान देने के बजाय उसकी अजीविका कमाने में सहायता करे श्रम, ही सब विकासो का अधिकार है।

आधुनिक समाज में सबसे बडी समस्या बेरोजगारी है। गाँधीजी के अनुसार इस समस्या का समाधान आधारभूत या बेसिक विद्या के माध्यम से किया जा सकता है । जिसमे हस्त उद्योग द्वारा शिक्षण करने पर जोर दिया है। भारतीय समाज मे हमारी मातृभाषा का महत्व घटता जा रहा है। आज के युग में शिक्षण संस्थाओं मे छात्रो को शुरू से ही अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। राष्ट्रभाषा एव मातृभाषा हिन्दी का प्रयोग दिन प्रतिदिन घटता ही जा रहा है हाल ही के लोकसभा चुनावो के बाद शपथ ग्रहण समारोह मे कुछ लोगों को छोडकर कर बाकी सभी लोग ने अंग्रेजी मे शपथ ली यह हम राष्ट्रभाषा हिन्दी महत्व में और सम्मान में निरंतर आ रही कमी का प्रत्यक्ष रूप है। विदेशी माध्यम ने हमारी देशी भाषाओं के विकास पर रोक लगा दी है, गाँधी जी ने कहा है कि विदेशी माध्यम के दुष्प्रभाव से हमारे छात्र दिमागी कमजोरी के शिकार हुए है। वे नकलची और रट्टू बन गये है विचार एवं नैतिक कार्यो के लिए असक्षम हो गए है एवं अपनी शिक्षा को समाज तक पहुंचार्ने में असफल हो गये है। विदेशी माध्यम ने हमारे छात्रा को हमारे ही देश में लगभग विदेशी बना दिया है यह वर्तमान काल का सबसे दुःखद परिणमा है।

गांधी जी का समर्थन करते हुए भिन्न–भिन्न शिक्षा आयोगो ने शिक्षा का माध्यम हमारे मातृभाषा हिन्दी को बनाए रखने का सुझाव दिया है परन्तु आज भी निजी स्कुलो में अंग्रेजी माध्यम से, शिक्षा दी जाती है जिसमे राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्थान गौण होता जा रहा है। भारतीय समाज अपनी आवश्यकताओ को पूर्ण करने में अयोग्य है जनसंख्या में अनुपात मे खाद्य सामग्री का उत्पादन नहीं हो रहा है। अतः आज बहुत जरूरी है की शिक्षण को स्वावलम्बी बनाया जाए। गाँधी जी के अनुसार आज भी इस देश में कई लोग भूखे मरते हैं, बुद्धिपूर्वक किया जाने वाला कार्य

ही प्रमुख शिक्षा प्रौढ़ शिक्षा है। हाथ से कार्य करने को हस्त कौशल कहते है, हस्तकौशल ही पशुओं और मनुष्यो में अंतर करती है स्पष्ट है कि शिक्षण को शिल्प एवं उद्योग पर आधारित करके भूखमरी एवं निर्धनता जैसी समाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सके। ग्रामीण लोगो को जीवन मे सुधार लाने के लिए उनका आत्मनिर्भर बनना बहुत जरूरी है। ,इसके लिए उनको श्रम शिक्षा की जरूरत है, जिसकी पूर्ति गाँधी जी के बुनियादी शिक्षा योजना के द्वारा संभव है।

गाँधी जी के शैक्षिक दर्शन–

गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा योजना सामाजीक व्यवस्था के निर्माण और परिवर्तन मे उचित भूमिका निभा सकती है। यह शिक्षा मनोविज्ञान पर आधारित है जिसमे बालको पर बल दिया गया है। गाँधी जी की शिक्षा प्रणाली सहयोगपूर्ण कार्य, सामुक्ति जीवन और सामाजिक गुणो का विकास करती है। यह समाजिक समस्याओ का सुधार करती है। यह शिक्षा निति लोगों को आत्मनिर्भर बनाती है, जो आज के समय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सीमाएँ –गाँधी जी की शिक्षा निति पर बेसिक, नियम–

1. उनकी आत्मानिर्भरता की सोच विद्यार्थियों पर परिश्रम बल देती है।
2. स्कूलो में व्यवसायिक केंद्र का होना। बच्चो के लिए निर्भर दृष्टिकोषा है।
3. प्राथमिक शिक्षा मे बच्चो को धन कमाने को नहीं कहा जा सकता। यह बच्चो के विकास में बाधा ला सकती है।
4. यह शिक्षा प्रणाली अब प्रचलन में नहीं है।

आधुनिक भारतीय समाज में गाँधी जी के बुनियादी शिक्षा एंव शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन करने से पूर्व भारतीय समाज के हर रूप को जानना अत्यंत आवश्यक है। समाज का शिक्षा से बेहतरीन नाता है यही कारण है कि अपने लोगो मे लिए अच्छी से अच्छी शिक्षा का प्रबंध करता है। 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात देश मे समाजवादी धर्म निरपेक्ष लोकतंत्रीय व्यवस्था स्थापित की गई । ब्रिटिशकालीन शिक्षा पद्धति में परिवर्तन किया गया। शिक्षा को भारतीय समाज भी जरूरतों को अनुरूप बनाने को लिए विभिन्न शिक्षा आयोगो में सिफारिश दी गई तब इस सबके बावजूद भी भारतीय समाज पिछडा हुआ देश है।

निष्कर्ष–

शिक्षा के क्षेत्र मे गाँधी जी का बहुत बडा योगदान रहा है। वे सबसे पहले भारतीय थे जिन्होंने हमारी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के महत्वपूर्ण मूल्यों पर चर्चा की है। एक वास्तविक प्रणाली डॉ. पटेल लिखते है कि गाँधी जी का शैक्षिक दर्शन इस भाव से वास्तविक है कि उन्होंने इसे व्यक्तिगत अनुभव द्वारा प्राप्त किया है। यह

एक प्रकार से वास्तविक हो सकती है। कि इस तरह की शिक्षा भूत काल मे किसी ने भी नहीं की, अपितु यह उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्तर पर इसका संरक्षण एव अनुकूलन पूरी तरह से वास्तविक है। गाँधी जी ने किसी भी प्रकार से कोई नए दर्शन को जन्म नहीं दिया। उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शक को एक व्यावहारिक रूप दिया है। व्यावहारिक रूप देने में उनकी मौलिकता है इसलिए आज के युग मे दर्शन को एक अलग दर्शन माना जाता है। विभिन्न शिक्षा संस्थानों ने भी शिक्षा के इस उद्देश्य को मंजूरी दी। दुर्भाग्य पूर्ण आज भी देश के कुछ नवयुवक स्कूल तथा कॉलेजो में निउदेश्य पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रहे है। उनका कोई लक्ष्य नहीं है वे यह नहीं जानते की उनकी जीवन की योजना क्या है। और यह शिक्षा उन्हें उसके लिए तैयार भी कर रही है अथवा नहीं।

गाँधी जी ने अध्यापको और विद्यार्थियों के संबंधो को घनिष्ठ और अतयंत प्रिय बनाने पर जोर दिया है क्योकि शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव बच्चो पर पड़ता है परंतु वर्तमान समय में अध्यापको और छात्रों में ऐसा सम्बन्ध नहीं देखा जाता है जो की शिक्षा की पूर्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है गाँधी ज के धार्मिक शिक्षण संबंधी विचारो में परिवर्तन स्पष्ट रूप से भारतीय शिक्षा संस्थानो पर पाया है. गाँधी जी ने सभी धर्मो के सिद्धांतो की शिक्षा पर बल दिया तथा नैतिक शिक्षा पर बल दिया। कोठारी कमीशन का मानना था कि धर्म और नीति को अपनाने का तात्पर्य है यह है कि आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक मामलो में समान अधिकार प्रदान किया जाए, किसी धार्मिक सम्प्रदाय के साथ कोई पक्षपात न किया जाये राज्य के विद्यालयों में किसी सम्प्रदाय में सम्प्रदाय के सिद्वांतो शिक्षा ना दी जाये। आयोग ने यह भी कहा की धर्म निरपेक्षना का तात्पर्य धर्महीनता या धर्म का विरोध नहीं है। वर्तमान शिक्षण में सर्व धर्म शिक्षण और नैतिक के महत्व को स्वीकारा गया है गाँधी जी की महिला शिक्षा और जन शिक्षा संबंधी विचारों ने भी भारतीय शिक्षण आयोगो पर प्रभाव डाला है। इन सभी आयोगो ने महिला शिक्षा का समर्थन करते हुए सुझाव प्रस्तुत किया आयोगों को रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर महिला शिक्षा की सुविधा की गई है और तीनो स्तरो को भिन्न–भिन्न पाठ्यक्रम निर्धारित किये है। विशेष रूप से संगीत गृहाविज्ञान कला तथा सामाजिक विषयों को महत्व दिया गया है

संदर्भ सूचीः–

1. **फिशर, लुइस** : द लाइफ ऑफ महात्मा गाँधी, लंदन 1959ण

2. **गाँधी, महत्मा** : द सलैक्टड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, वोल्यूम–4 सलैक्टड लैटर्स, नवजीवन पाब्लोगिंग हाउस, अहमदाबाद 1968.

3. **मूर्ति, वी0 रामना** : गाँधी एसोशमल राइटिस, गाँधी पीस फाउण्डेशन, नई दिल्ली 1970

4- **दत्त, डॉ0 डी0 के**. : सोशल, मॉरल एण्डु रिलीजियस फिलोसॉफी ऑफ महात्मा गांधी, नई दिल्ली 1980.

5- द दयाल, बी0 : डेवलपेन्ट ऑफ मॉडर्न इण्डियन एजुकेशन, 1953.